खलाई पौधो से बात करती है

Ursula Nafula
Jesse Pietersen
Tanvi Sirari
hindi
nivå 2

(uten bilder)

ये खलाई है। ये सात साल की है। इसकी भाषा लुबुकुसु में इसके नाम का मतलब है, “एक अच्छी इंसान”।

खलाई जाग कर संतरे के पेड़ से बात करती है। “कृपया खूब बढ़ो अौर हमे बहुत सारे पके संतरे दे दो।”

खलाई विद्यालय चलकर जाती है। रास्ते में वो घास से बात करती है। “कृपया घास, हरी-भरी हो जाना अौर सूखना मत।”

खलाई जंगली फूलो के पास से गुजरती है। “कृपया फूलो खिलते रहना ताकि मै तुम्हे अपने बालो में लगा सकूँ।”

विद्यालय में, खलाई आँगन के बीच में लगे पेड़ से बात करती है। “कृपया पेड़, अपनी शाखाअो को बड़ी करो ताकि हम तुम्हारी छाया के नीचे पढ़ सके।”

खलाई अपने विद्यालय के चारो ओर लगी बाड़ से बात करती है। “कृपया ताकतवर बनो और बुरे लोगो को अँदर अाने से रोको।”

जब खलाई विद्यालय से वापस घर आयी, तब वो संतरे के पेड़ से मिली। “क्या तुम्हारे संतरे पक गये है?” खलाई ने पूछा।

“संतरे अभी भी हरे है,” खलाई ने आह भरते हुए कहा। “मैं तुमसे कल मिलूँगी संतरे के पेड़,” खलाई बोली। “शायद तब तुम्हरे पास मेरे लिये एक पका संतरा होगा!”

Barnebøker for Norge

barneboker.no

खलाई पौधो से बात करती है

Skrevet av: Ursula Nafula
Illustret av: Jesse Pietersen
Oversatt av: Tanvi Sirari

Denne fortellingen kommer fra African Storybook (africanstorybook.org) og er videreformidlet av Barnebøker for Norge (barneboker.no), som tilbyr barnebøker på mange språk som snakkes i Norge.

Dette verket er lisensiert under en Creative Commons
Navngivelse 4.0 Internasjonal Lisens.